ओम् शान्ति 16-6-10 मधुबन

प्यारे बापदादा के अति स्नेही, सर्व को अपनी सूक्ष्म मन्सा सकाश देने वाली सर्व निमित्त टीचर्स बहिनें तथा सभी ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - कल 15 जून सायं 8.00 बजे, सर्व की स्नेही अपनी मीठी प्यारी दादी शान्तामणि जी अपने पुराने शरीर को छोड़ बापदादा की गोद में चली गई। रात्रि 10 बजे उनके पार्थिव शरीर को पाण्डव भवन के हिस्ट्री हाल में लाया गया जहाँ पूरी रात अखण्ड योग भट्ठी चलती रही। 16 जून सवेरे 9 बजे दादी शान्तामणि जी के पार्थिव शरीर को एक छोटे ट्रक में सज़ाकर मधुर गीतों की ध्वनि के साथ आबू की परिक्रमा दिलाते हुए शान्तिवन में लेकर गये, जहाँ तपस्याधाम के सामने सभी शान्तिवन तथा आबू निवासी भाई बहिनों ने अन्तिम दर्शन करते दादी जी को अपने स्नेह सुमन अर्पित किये। फिर वहाँ से उन्हें ज्ञान सरोवर में लेकर आये, जहाँ बाबा के कमरे के आगे सभी ज्ञान सरोवर निवासी भाई बहिनों ने अपनी श्रंधाजलि दी। उसके पश्चात पाण्डव भवन में लेकर आये जहाँ मधुबन निवासी भाई बहिनों ने तथा पंजाब ज़ोन वा अन्य स्थानों से आये हुए भाई बहिनों ने पुष्पांजली अर्पित की फिर चारों धामों की यात्रा कराते, म्युजियम की ओर परिक्रमा दिलाते संस्कार स्थल की ओर लेकर गये। जहाँ सभी ने ओम् शान्ति की मधुर ध्वनि के साथ दादी जी को अन्तिम विदाई दी। उसके पश्चात पाण्डव भवन में विशेष दादी शान्तामणि जी के निमित्त मीठे बाबा को शशी बहन ने भोग स्वीकार कराया, भोग का सन्देश इस प्रकार है:-

दादी शान्तामणि जी के निमित्त विशेष भोग तथा वतन का दिव्य सन्देश

आज सर्व ब्राह्मण परिवार की यादप्यार लेकर जैसे ही मैं वतन में पहुंची तो आज वतन का नज़ारा बहुत ही सुन्दर दिखाई दे रहा था। चारों तरफ बहुत सुन्दर सजावट थी। मैं सजावट देख रही थी, तो मन में संकल्प उठा दादी जी कहाँ हैं? इतने में देखती हूँ कि एक बहुत ही सुन्दर रंगबिरंगा चमकीला पर्दा है, वह पर्दा धीरे-धीरे खुलता है, पर्दे के पीछे एक चबूतरा था, चबूतरे पर दादी जी बैठी हुई थी। दादी जी का रूप बहुत सुन्दर सजा हुआ था। चबूतरे के चारों तरफ सजे-सजाये कुछ एंजिल खड़े थे, जिनके हाथों में माला थी और एक एक दादी के सामने आते दादी को वह माला पहना रहे थे, जिससे दादी का बहुत सुन्दर श्रंगार हो रहा था। उस माला से बहुत सुन्दर लाइट निकलकर चारों तरफ रिफलेक्ट कर रही थी। दादी जी का रूप शीतला देवी जैसा दिखाई दे रहा था। कुछ सेकेण्ड के बाद बाबा सामने आये। बाबा ने कहा बच्ची देखा दादी को! मैंने कहा हाँ बाबा, दादी तो बहुत सुन्दर रूप में दिख रही हैं। तो बाबा ने कहा मालूम है आज दादी का श्रंगार कौन कर रहे हैं? तो बाबा ने ही सुनाया कि आज दादी का श्रंगार वतन में बाबा, दादी, मम्मा और जो भी भाई-बहनें एडवान्स पार्टी में गये हैं, वो सब दादी का श्रंगार कर रहे हैं। हरेक दादी के गुणों का वर्णन कर रहा है। मैंने कहा बाबा एडवान्स पार्टी तो कर ही रहा है लेकिन साकार में भी जो भी हमारी दादियाँ और ब्राह्मण परिवार के हैं, बच्चे से लेकर बड़े तक सभी दादी जी को बहुत प्यार करते हैं। फिर मैंने कहा बाबा आपने हमारी दादी जी को अपने पास बुला लिया। तो बाबा मुस्कराये और कहा बुलाया नहीं है, ड्रामानुसार जो दादी का पार्ट है, उस अनुसार विशेष कर्तव्य, विशेष सेवा के निमित्त यहाँ बुलाया है।

मैंने दादी जी को कहा कि दादी आप क्यों चली आई? तो दादी मुस्कराई और कहा मैं बाबा को कह रही थी बाबा मुझे भी बुलाओ। तो बाबा कुछ दिन से मुझे अनेक स्थानों पर ले जाता था। तो मैंने पूछा दादी आप कहाँ कहाँ गई? तो बाबा ने कहा इस बच्ची को मैंने देश विदेश के अनेक स्थानों का सैर कराया है, यह बच्ची अपने चेहरे द्वारा मम्मा का साक्षात्कार कराती थी। साथ-साथ अपनी धारणा के द्वारा एक-एक बच्चे को अनुभव कराये हैं, वो बच्चे याद करते हैं। कुछ दिनों से विदेश की जो गुप्त सेवायें हो रही हैं वो भी बाबा इनको दिखा रहा था। दादी तो बहुत ही शान्त बैठी थी।

इतने में क्या देखती हूँ कि दादी के पीछे एक लाइट हाउस की तरह कुछ है। लाइट हाउस के ऊपर एक बहुत सुन्दर चमकती हुई लाइट दिखाई दे रही थी। उसमें शिवबाबा कर रूप नहीं था, एक शक्ति रूप दिखाई दे रहा था। उसमें से लाइट निकलते आधे चन्द्रमा की तरह सर्किल बन रहा था। जैसे मोर के पंख धीरे-धीरे खुलते हैं। उसी डिजाइन में

छत्रछाया का रूप भी था और डिजाइन भी थी, उस डिजाइन में एक-एक स्टार बना हुआ था। उस स्टार से लाइट चमकती थी जिसमें दादी जी की एक-एक विशेषता दिखाई दे रही थी। जैसे वो लाइट आती थी तो दादी जी का रूप उस विशेषता के अनुसार बनता जाता था। बाबा ने कहा इस बच्ची ने जबसे यज्ञ में कदम रखा है, अपने शान्त स्वरूप के द्वारा अपनी अनेक विशेषताओं को प्रकट किया है।

दादी जी ने कभी भी क्यों, क्या कैसे नहीं कहा। अपने शान्त स्वरूप द्वारा कोई भी समस्या लेकर आता तो उसको भी हल्का कर देती थी और कहती थी बाबा साथ है। इतने में बाबा ने कहा कि आज वतन में भी सब याद कर रहे हैं। एडवान्स पार्टी वाले और दादियाँ सभी ने दादी को घेर लिया और सर्कल बनाया, जो बहुत सुन्दर लग रहा था। मैंने कहा आपको दादी जानकी जी बहुत याद कर रही हैं। तो कहा मैं भी याद कर रही थी। मैंने दादी जानकी जी से मिलन मनाया। जहाँ-जहाँ दादी जी सेवा पर थी, बाबा मुझे भी वहाँ-वहाँ सूक्ष्म में ले जाता था। बाबा ने, दादियों ने बहुत स्नेह से हमें पाला है। फिर दादी जी शान्त हो गई। बहुत मुस्कराता हुआ चेहरा था।

मैंने कहा मधुबन, ज्ञानसरोवर, शान्तिवन में सब आपको याद कर रहे हैं। कहती हैं मैं भी तो सबको याद करती हूँ। बाबा की कमाल है, बाबा ने ऐसे रत्न चुने हैं, जो रत्न विशेष सेवा कर रहे हैं। मेरा एक विशेष शुभ संकल्प है कि यह रत्न ऐसी सेवा करें जो इनके चेहरे और हर कर्म द्वारा बाबा की प्रत्यक्षता हो।

फिर जैसे सामने भोग रखा तो दादी बाबा को देख रही थी, बाबा दादी को देख रहे थे। बाबा दादी को भोग स्वीकार कराने लगे, तो कहती है कि मेरी सखियाँ कहाँ हैं! तो बाबा ने एडवान्स पार्टी की सभी सखियों को इमर्ज किया। फिर बाबा ने भोग स्वीकार कराया। सब सखियों को देखते दादी बहुत मुस्कराई और बोली बाबा अब तो कमाल हो जायेगा।

फिर दादी जी ने सभी दादियों को और सभी भाई बहिनों को याद देते कहा मधुबन का हर रत्न विशेष रत्न है, यह सब बाप की प्रत्यक्षता का स्वरूप बनें यही मेरा शुभ संकल्प है। फिर बाबा ने सेवा करने वालों को भी इमर्ज करके कहा कि इन्होंने सेवा से बहुत पुण्य कमाया है। महारथियों की सेवा में जो इनके पुण्य का खाता जमा होता है, भाग्य मिलता है इससे बढ़कर और कोई सेवा नहीं है। यह सेवा नहीं, सेवा के साथ इन्होंने बहुत पुण्य कमाया है। दादी तो बहुत डिटैच बैठी थी। मैंने कहा दादी कुछ कहना है। तो कहा बस, सभी सेवा कर रहे हैं ना। ऐसे ही सेवा करते आगे बढ़ते रहें। ऐसे कहते दादी ने सबको बहुत याद दी और मैं वापस आ गई। ओम् शान्ति।

ओम् शान्ति 15-6-10 मधुबन

''दादी जानकी जी द्वारा सुनाये हुए दादी शान्तामणि जी के साथ के संस्मरण''

आज बाबा ने कहा घड़ी घड़ी अन्दर से बाबा-बाबा निकलता रहे, ड्रामानुसार बाबा के अव्यक्त होने के पहले जून मास में मैं बाबा के साथ यहाँ थी। जून मास की बहुत अच्छी-अच्छी बाते हैं। जून मास में ही मम्मा ने 1965 में देह त्याग किया। आज हमारी शान्तामणि दादी ने शरीर त्याग किया।

हम जहाँ भी थी बाबा के साथ हर रोज़ दादी शान्तामणि की याद रहती थी। तो ऐसी हमारी स्थिति हो जो अपने आप बाबा के साथ ऐसी आत्मायें याद रहें। वैसे बाबा कहता है बाप के सिवाए किसकी याद न आवे, पर यह तो जरूर याद आयेंगे! क्योंकि पक्का पिताव्रत और सतीव्रत पालन किया हुआ है। शान्तामणि दादी छोटेपन से मुझे बहुत अच्छी लगती थी। दादी की 4 बहिनें और थी। देवा, ध्रुव, कला और सन्देशी। (ध्रुव सामने बैठी है)। जैसे बाबा समर्पण हुआ फौरन दादी शान्तामणि और चन्द्रमणि दादी का बाप भी समर्पण हुआ। दादी शान्तामणि की माँ सती भाभी, ध्यानी दादी और मम्मा की माँ तीनों बहिनें थी। तो मम्मा जब समर्पित हुई तो दादी शान्तामणि की पूरी फैमली सभी कुमारियां माँ बाप सब समर्पित हो गये। दादी शान्तामणि का एक भाई था, उसके बेटा बहू अभी अमेरिका में बड़े प्यार से मिला। तो जहाँ भी जो लौकिक परिवार है उनको भी नशा है हमारी दादी है।

मैंने अपनी लौकिक माँ को 15 साल पत्र नहीं लिखा था। वह भले बाबा बाबा करती थी परन्तु थोड़ा मोह था। तो बाबा ने कहा उसको पत्र लिखो, मैने कहा क्या लिखूं... तो कहा लिखो कि चन्द्रकात वेदान्त पढ़ा है, उसमें लिखा है कि वह विमान में चढ़कर अमरलोक में जा रहे हैं और मृत्युलोक में जो बैठे हैं वह देख रहे हैं। वह पत्र मिलते ही उसकी आंखे खुल गई। उसके बाद बाबा ने उनसे कई सेवायें कराई। ऐसे हमारी दादी शान्तामणी को बाबा ने अचानक बोला

था, कोलम्बो में जाओ क्योंकि दादी चन्द्रमणी और शान्तामणी दोनों के बाप कोलम्बो में थे, तो दादी को बाबा ने अचानक कहा तुम कोलम्बो में जाओ। वहाँ ऐसी सेवा का बीज बोया है जो अभी तक वहाँ बहुत सेवायें हो रही हैं। कोलम्बो में जब मैं जाती हूँ तो याद आता है, कि दादा रतनचन्द (चन्द्रमणि दादी के फादर) और दादा रिझूमल (शान्तामणी दादी के फादर) उन्होंने जो वहाँ कमाया था, वह सब समर्पण किया।

एक बार बाबा ने शान्तामणि दादी को देखकर कहा कि यह सचली बच्ची है। (बहुत सच्ची बच्ची है)1 बाबा उसको बहुत प्यार से कह रहा था। मैंने कहा मैं भी सच्ची बच्ची बनूंगी। हमारा आपस में प्यार भी बहुत सच्चा था। शान्तामणि दादी को एक बारी 104 बुखार हुआ, मैं उस समय नर्स थी, मैंने बाबा को सुनाया, बाबा आज दादी को इतना बुखार है तो बाबा ने कहा यहाँ आओ, बाबा के पास एक कोलनवाटर की शीशी थी, बाबा ने कहा इसको यहाँ लगा दो, लगा दिया। आधा घण्टे के बाद बुखार चला गया। वन्डर था।

मीठे बाबा ने जैसे हमारी पालना की है, बड़ी वन्डरफुल पालना मिली है। मुझे खुशी है, यह मेरा भाग्य है जो आज मैं यहाँ पहुंच गई। 15 तारीख मधुबन से निकली थी, दो मास के बाद मधुबन में आई। परसों कैलीफोरनिया में थी, कल लण्डन आई, वहाँ 6 घण्टा रूकी और भागते भागते मधुबन आ गई। सच्चाई और स्नेह यह कमाल का काम करता है। किसी को कुछ कहो नहीं तुम ऐसे हो तुम वैसे है, शान्तामणि दादी ने यह कभी नहीं बोला होगा। शान्तिवन में शान्तामणि दादी ने बहुत अच्छी सेवायें दी हैं। बहुत अच्छा ध्यान दिया है। तो बाबा कहते हैं याद और सेवा से ऐसी स्थिति बनाओ जो यादगार बन जाये। जैसे बाबा का टावर आफ पीस है, दादी का प्रकाशस्तम्भ है। ऐसे दादी ने अपना शान्तिस्तम्भ स्वयं बना लिया है। शान्ति स्तम्भ तब बनी जब सदा सत्यता की शक्ति से, पॉजिटिव पावर से शान्त रही है। कभी उन्हें कडुवा शब्द बोलते हुए नहीं देखा। शान्तामणि दादी ने कभी किसी को आंख नहीं दिखाई होगी, मैं कभी दिखा देती हूँ। शान्तामणि दादी ने अपने शान्त स्वरूप से सबको प्यार दिया, शान्ति दी और कारोबार ऐसी जैसे कुछ भी कर नहीं रही है। कभी करता हुआ नहीं देखा, तो कर्तापन के भान में न होने के कारण, कितना साइलेन्स में रही।

उसने अपना योग जमा कर लिया, अब यह नहीं कहेंगे दादी को योगदान दे रहे हैं। उसके निमित्त हम योग करके अपने को ऐसा शुद्ध शान्त बनायें, दादी तो सदा बाबा को याद करती रही। दादियों के दिल में रीयली बाबा है, इतनी सब सेवायें किसने की हैं! इतने सब बच्चे किसके हैं! हमारे बहन भाई हैं। वन्डर है यह। तो बहन भाई की रूहानी दृष्टि ऐसी हो जो मैं बाबा की, बाबा मेरा। बाकी सब कुछ बाबा तेरा है, जो बाबा का है वह मेरा हो गया। हमने कहा बाबा तेरा, बाबा ने कहा तू है मेरा। हम बाबा के हो गये यह बड़े अच्छे भाग्य की बात है। कनेक्शन, रिलेशन और कम्युनीकेशन बाबा के साथ। बाबा के साथ बातें कैसे करेंगे! मनुष्य आत्मा से तो बात करेंगे, सुनेंगे, बोलेंगे पर बाबा से बात नहीं कर सकते। किसी ने कहा बाबा देता है अनकन्डीशन लव परन्तु कन्डीशन भी डालता है। वह लव देखो कैसा है, बचपन से प्यार दिया है, प्यार से पढ़ाया है, श्रीमत भी प्यार से देता है, बाबा इतना प्यार करता है, अगर हम प्यार से स्वीकार नहीं करते, आज्ञाकारी, वफादार इमानदार नहीं बनते हैं तो कहता मैं कुछ नहीं दे सकता हूँ। अच्छा।

16-6-10

ओम् शान्ति। ओम् शान्ति भवन की ओम् शान्ति वन्डरफुल है। अनेक प्रकार की मीठे बाबा की, दादियों की बातें स्मृति में आती हैं। आज शान्तामणि दादी की अर्थी हिस्ट्री हाल में है, जब मम्मा की रखी थी तो बाबा ने कहा मम्मा मुरली सुनेगी। तो शान्तामणि दादी मुरली सुनेंगी क्योंकि सारी लाइफ बाबा और मुरली के बिगर और कुछ दादी के दिल मे रहा ही नहीं है। बचपन से दादी को जानती हूँ। भले हम साथ साथ इकट्ठे नहीं रहे हैं पर साथ साथ बाबा ने जैसे चलाया है वैसे चले हैं। यात्रा के साथी हैं। कल्प कल्प यह हमारा ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न संबंध, कल्प कल्प की छाप लगाता है। कल्प बाद भी होगा, कल्प पहले भी था और ड्रामानुसार मैं अपने भाग्य की महिमा खुद करती हूँ, शिवबाबा है वरदाता, ब्रह्मा बाबा है भाग्य विधाता, दोनों मेरे प्यारे बाबा ने समय पर मुझे कैसे यहाँ पहुंचाया, यह वन्डर है, भाग्य है। कहाँ लासएंजलिस वेस्ट, एकदम दूर, वहाँ से खींचकर समय पर पहुंचाया है।

मधुबन में हर एक के चलन और चेहरे से त्याग और तपस्या दिखाई देती है। दादी के चेहरे से कभी दिखाई नहीं पड़ा कि इसको कुछ तकलीफ है, कभी मुख से नहीं कहा। ऐसा कभी पेशेन्ट देखा जिसमें इतना पेशेन्स हो। सेवा करने

वाले भी थके नहीं होंगे। अथक भव का वरदान देने वाली दादी है। नाम जैसे शान्तामणि वैसे सदा ही कभी भाव स्वभाव की बात नहीं सुनी होगी। कभी यह आवाज किसके अन्दर से नहीं निकला होगा, सबसे मिलनसार। हमारी यज्ञ की कारोबार कराची में दादी सम्भालती थी। फिर कुमारका दादी ने सम्भाला फिर ईशू दादी ने सम्भाला। तो उनकी महिमा कितनी गायन करें, जिसने बाप की महिमा अपने जीवन में लाई।

संगम पर बाबा बच्चों को इतना देता है, इतना देता है, दिनरात बाबा जो देता है वही गिनती करते रहें। मैंने लण्डन में बोला, हंसी की बात भी है तो सच्ची बात भी है, मैंने कहा मुझे कोई एकाउन्टेट चाहिए। कितनी खुशी बाबा देता है वह सिर्फ गिनती करे। जिसकी कमाई होती है वह खुद गिनती नहीं कर सकता। गिनती करने वाला कोई एकाउन्टेंट चाहिए, फिर उसको और भी असिस्टेंट चाहिए। एक से पूरा नहीं होता है। तो मैंने कहा पहले मुझे मदद करो फिर मदद मिलेगी। कितनी खुशी बाबा ने दी है, मुझे टाइम नहीं है गिनती करने का, आप सबको मधुबन में बैठे इतनी खुशी है जो गिनती करने वाला कोई हो! पुराने जमाने में जो बड़े बड़े काके मामे थे, वह इतनी शान से शान्ति से कमाई करते थे, दान पुण्य भी करते थे, उस घड़ी कागड़ी बोलते थे, (एकाउन्टेंट नहीं थे) वही बैठकर सम्भालता था कितना आया, कितनी सेवा हुई।

तो बाबा हमारा साथी है, एक मिनट भी वह हमसे जुदा नहीं होता है क्योंकि हमारे दिलों का दिलाराम वही है। जब उसको सामने रखते हैं तो दिल बहुत आराम में है। कभी रेस्टलेस का अनुभव नहीं है। कोई कहे आज थोड़ी थकी है, यह थकावट कहाँ से आई। क्या किया है, कभी भी चेहरे पर या अन्दर सूक्ष्म थकावट आई तो न रहेगा योग, न रहेगा ज्ञान, न रहेगी धारणा, न रहेगी सेवा। समझ जाओ। किसके भाव स्वभाव के कारण या असन्तुष्टी के कारण थोड़ी भी थकावट रही तो ज्ञान योग कुछ नहीं रहेगा।

ज्ञान और योग का जो अच्छी तरह रस लेते हैं, उसकी एकरस ऊंची अवस्था बन सकती है। ज्ञान और योग, धारणा श्रेष्ठ कराता है क्योंकि सर्वगुण सम्पन्न बनना है। ज्ञान में समझ है, योग में ताकत है, कोई अवगुण अन्दर रह न जावे। और ही इतने गुण हों जो सामने संग में आये वह भी गुणवान बन जाये।

पहले हम सतोप्रधान बनूं या सर्वगुण सम्पन्न बनूं? पहले क्या? सतोगुणी बनेंगे तो सतोप्रधान बनेंगे। सतोगुणी बनेंगे तो सबके गुण ले लेंगे। तो यह अन्दर की आंखे कभी खोल कर देखो तो सबमें गुण हैं। न सिर्फ आत्मा देखो, पर यह आत्मा बाबा के बच्चे हैं, बड़े गुण हैं। पर यह बात ठीक नहीं है, एक भी बात ठीक नहीं है...यह संकल्प आया तो न मैं हूँ आत्मा, न वह है परमात्मा, न यह मेरे बहन भाई। किसने कहा है तुम यह कहो, बाबा ने कहा है क्या कि तुम कहो यह अच्छा नहीं है। यह कहना तुम्हारी जिम्मेवारी नहीं है, तुम अच्छा बनो यह तुम्हारी जिम्मेवारी है। मन में जरा भी बात रखी तो बाबा दिल से दूर हो जायेगा। जरा भी दिल में, मन में कोई बात रखी हुई है और कहता है मैं बाबा को याद करता हूँ तो वह अपने को ठगता है, वह कभी बाबा को याद नहीं कर सकता। बाबा कहे यह मेरा योगी बच्चा है। बाबा को स्नेही प्रिय लगते हैं पर ज्ञानी तू आत्मा अति प्रिय लगते हैं। तो मैं कौन हूँ? हर एक अपने आपको चेक करे, मैं कौन हूँ, मेरा कौन है! अब मुझे क्या करने का है, बाबा याद दिलाता है, हे आत्मा तुमको यह करने का है। किससे पूछने, मूंझने की जरूरत नहीं है। बाबा हर पल, हर सेकण्ड याद में रहने वाले से अपने आप कराता है। उठाता भी है, सुलाता भी है, बिठाता भी है परन्तु किसको? जिसने अपने आपको अन्दर से दिल से समर्पण किया हुआ है, जो मैं मेरा से फ्री है।

आज पंजाब मधुबन में आ गया है। (पंजाब ज़ोन का एकाउन्ट चल रहा है) पंजाब की सेवा शुरू से शुरू हुई। पंजाब जहाँ 5 नदियां हैं। अभी हर एक देखे, जहाँ से भी निकले हैं पूरा बाबा का राइट, एक्यूरेट ऐसा बच्चा हूँ, जो बाबा कहे यह मेरा बच्चा देखो, जिसमें कभी अभिमान नहीं, कोई अपमान करे तो जरा भी चेहरे पर न आये कि इसने मेरा अपमान किया। ऐसी अन्दर से स्थिति बनाने वाला बाबा का प्यारा बच्चा। तो शान्तामणि दादी बाबा का प्यारी बच्ची हमारे सामने मिसाल है ना! हमारी दादी प्रकाशमणि, सबने आंखों से देखा, कभी भूल नहीं सकती। बहुतों ने दीदी को नहीं देखा, जिन्होंने दीदी को देखा उनके दिल से पूछो। दीदी क्या है? एकदम श्रीमत पर, मनमत कभी नहीं चलाई। धर्मराज का रूप, कोई गलत काम करने नहीं देगी। कोई अलबेलाई में आकर कुछ भी बात हेराफेरी नहीं कर सकते। सच्चाई की शक्ति क्या है, दीदी ने अपने प्रैक्टिकल जीवन से हमारे दिलों में छाप लगाई है। तो संगम पर अपने दिल

में ऐसी ऊंची-ऊंची बातें रखो, बीच की, घटिया क्वालिटी की नहीं रखो।

बाबा ने कहा है ब्राह्मण सो फरिश्ता सो देवता इस नशे में रहो। तो ब्राह्मण ऐसा हो जो होली और योगी हो। जितनी हमारी पवित्रता उतना सच्चाई और प्रेम, आटोमेटिक सेवा करता है। पवित्रता से सच्चाई और प्रेम की सेवा इतने में दिलों तक पहुंचती है। सच्चाई और प्रेम के वायब्रेशन सारे विश्व को मिलें।

इस बारी ड्रामानुसार जो दो महीना सेवा का पार्ट रहा है, चाहे 56 साल से सेवायें हुई हैं, विदेश में 36 साल हो गया, इस बारी जो सेवा का पार्ट था वह भिन्न था। क्योंकि अभी सबको चांस है, आज का आया हुआ भी है, कई ऐसी आत्मायें हैं जो बिल्कुल रेडी हैं, उनके दिल को थोड़ा सा टच करें, परमात्मा की यह पढ़ाई है, जो कुछ स्टडी किया है, वह महसूस करेंगे। आजकल स्प्रीच्युलिटी की बहुत गहराई में जा रहे हैं। राजनीतिज्ञ हैं वा धार्मिक, सब थके हुए हैं। चाहते कुछ और हैं होता कुछ और है। इसलिए हर एक के अन्दर चाहना है कोई अच्छा सही रास्ता बतावे जिससे दुनिया का भविष्य अच्छा बने। दुनिया का भविष्य बिगड़ा हुआ है। पर मेरा भविष्य बनें तो दुनिया का बनायें। लाखों अपना भविष्य बनावें तो करोड़ों की आंखें खुलेंगी कि यह हमारा भविष्य है। तो हर आत्मा को यह पता चले कि भविष्य लाइफ यह होती है, जिसमें कोई चिंता नहीं, कोई फिकर नहीं, कल क्या होगा! अच्छा ही होगा। डरने की, घबराने की कोई बात नहीं। ऐसा स्थिति में स्थित रहने की बात है जो सभी समझें यह फरिश्ते हमारे रक्षक हैं। ब्राह्मण हैं शिक्षक। फरिश्ते हैं रक्षक। जो शिक्षा मिली है, कहाँ से मिली है, कैसे मिली हैं! ब्राह्मणों के मुख से ऐसे शब्द निकलेंगे, जो कहेंगे यह कहाँ से सुना रहे हैं। तो बाबा ने शुरू में जो हमारे में सेवा की शक्ति भरी है वह अभी औरों को मिले। सबको दुनिया में रहने की शक्ति चाहिए। तो सदा स्व की स्मृति में बाबा हो, ऐसी स्थिति में रहो। यही दादी के लिए सच्ची श्रंधाजलि हैं। यह जून मास मम्मा का भी है। शान्तामणि दादी और मम्मा का सम्बन्ध था, शान्तामणि दादी भी मम्मा जैसी है। अच्छा। ओम् शान्ति।

विशेष सूचना

हम सबकी अति स्नेही दादी शान्तामणी जी के निमित्त सभी सेवाकेन्द्रों पर 12वें दिन दिनांक 27-6-2010 रविवार को विशेष भोग लगाया जाये। भोग में जो सहज सम्भव हो वह बनाकर सभी ब्राह्मणों को स्वीकार करायें।